International Journal of New Media Studies (IJNMS), ISSN: 2394-4331
Volume 10 Issue 1, January-June, 2023, Impact Factor: 7.786

अल्पना मिश्र के 'छावनी में बेघर' कहानी संग्रह में नारी का यथार्थ चित्रण

डॉ. सविता हुड्डा

सर छोटू राम राजकीय महिला महाविद्यालय सांपला (रोहतक)

परिचय

हिंदी साहित्य जगत में जब कोई भी रचनाकार, लेखक और कवि अपनीरचना का लेखन कार्य करता है तो उस समय उनका मुख्य दृष्टिकोण समाजमें विघटित समस्याओं, अच्छाई, बुराइयों की ओर होता है तथा वह समाज कोज्यों का त्यों चित्रित करता है। साहित्यकार विभिन्न विधाओं के द्वारा मनुष्यजीवन के विभिन्न पहलुओं को अपने साहित्य का माध्यम बनाता है।साहित्यकार का उद्देश्य समाज में व्याप्त बुराइयों और अच्छाइयों का चित्रणकरना ही नहीं, अपितु समाज में घटित विभिन्न समस्याओं और कुप्रथाओं कीओर पाठक का ध्यान दिला कर उसकी चेतना को भी जागरूक करना है ।यथार्थ का क्षेत्र बहुत ही विशाल और व्यापक हो गया है और एकरचनाकार अपने साहित्य के माध्यम से पाठक के सामने किसी भी स्थिति यथार्थका वर्णन करता है। सामान्यतः हम कह सकते हैं कि वास्तविक स्थिति काज्ञान होना ही यथार्थ है।

अल्पना मिश्रं के कहानी संग्रह 'छावनी में बेघर' में लेखिका नेअपनी कहानियों के माध्यम से नारी की यथास्थिति का वर्णन किया है।लेखिका का मूल मंतव्य अपने इस कहानी संग्रह में नारी के साथ हो रहीसमाज में घटित समस्याओं के बारे में चित्रण करना है जिससे नारी इनसमस्याओं से संघर्ष करती नजर आती है । आज नारी का जीवन विभिन्नसमस्याओं से भरा हुआ है एक तरफ नारी को माता के रूप में शक्ति के रूप मेंपूजा जाता है तो दूसरी तरफ उसे अबला समझा जाता है। उसका शोषणकिया जाता है। पिछले विगत वर्षों से लेकर अभी तक नारी के जीवन में काफीबदलाव देखने को मिलते हैं लेकिन अभी भी नारी कहीं न कहीं मानसिक,शारीरिक और आर्थिक रूप से पीड़ित दिखाई देती है और जिससे वह लड़ती
नजर आती है।

लेखिका की 'मुक्ति प्रसंग' कहानी में एक नारी जो अध्यापिका है वह हररोज ऋषिकेश से देहरादून और देहरादून से ऋषिकेश 4 घंटे बस में सफरकरती हैं। उसे बस में सीट न मिलने पर बस में खड़ा होना पड़ता है वह सुंदरभी है जिसके कारण सभी लोगों की चाहे वो जवान हो या बूढ़ा उनकी दृष्टिउस पर रहती हैं वह उनसे हर रोज बचती बचाती अपना सफर करती है।वासना से तृप्त बस में सफर करने वाले व्यक्ति उस सुख को भोगना चाहते हैंलेखिका एक उदाहरण के द्वारा स्पष्ट करती हैं कि ''मसलन अपनी ला बेलाकी चप्पल किसी के भी पैर पर रखते हुए, किसी के भी हाथ, कोहनी, कंधे, पुट्ठेसे टकराते हुए यहां तक कि कई बार तो कोई भद्दा आदमी जानबूझकर उनकेउरोजो से टकरा जाता, पर वे लक्ष्य नहीं छोड़ती।'' पृष्ठ 9 यह सब अपने पतिको भी नहीं बता सकती। क्योंकि वह भी इस चीज को समझ नहीं पाएंगेइसलिए नायिका इन सब को खुद ही झेलती है और पूरे स्वाभिमान के साथहर रोज बस में सफर करती है। इसी प्रकार बहुत सी नारियों को नौकरी करनेके लिए बस में जाना पड़ता है और उन्हें इन परिस्थितियों का सामना करनापड़ता है।

लेखिका ने नारी की स्थिति को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा है। उनमें सेएक कहानी 'लिस्ट से गायब' में ऐसी नारी की स्थिति का चित्रण करते हुएबताया है जो एक भरे पूरे बड़े परिवार में रहती है जिसका विवाह एक बड़ेअफसर के साथ हुआ है। लेकिन इस घर में नायिका का अपनी सास के साथहमेशा किसी ना किसी बात को लेकर झगड़ा रहता है जब नायिका को बच्चाहोता है तो तो उसकी सास उसे और उसके बच्चे को देवता के स्थान पर लेजाना चाहती है लेकिन वह अभी कमजोर है उसका बच्चा भी 20 ही दिन काथा तो वह मना कर देती है जिस पर उसकी सास उसके देवर की तरफइशारा करते हुए कहती है कि–''इन्हें छोड़ो, कोई घर की परंपरा ना माने तोदईश्वर उसको दंडित करेगा। श्री तुम जाकर बच्चे को ले आओ। हम लोगचलेंगे चलो संजय ।''पृष्ठ 96 इस प्रकार सास अपनीसमझती तथा देवता के स्थान पर जाना पहले उचित मानती हैं। समाज में नजाने कितनी ऐसी सास और बहू है जिनके झगड़े किसी ने किसी बात कोलेकर चलते हैं लेकिन वह अपनी बहू की स्थिति को न समझ

कर उन्हेंअनदेखा कर अपनी बात को ऊपर रखती हैं। इसी तरह नायिका का पतिसंजय भी उन्हें कुछ नहीं समझता वो हमेशा दारू पीता है और घर को देर सेलौटता है जिससे नायिका सोचती है कि– ''कल रात अगर वे जल्दी आ जाते,कल रात अगर शराब न पीते, बस कल की रात जुआ ना खेलते, बस कलरात एक बार बच्चे के रोने पर उठ जाते, बस एक बार कह देते कि तुम्हारीतकलीफ से कलेजा फटता है।''पृष्ठ 96 इस तरह लेखिका ने नायिका की पीड़ाका और मनोविश्लेषण द्वंद्व का विश्लेषण किया है। जिससे अकेली नारी लड़तीनजर आती है।

इसी तरह लेखिका ने 'मिड डे मील' कहानी में नारी की आर्थिक स्थितिका वर्णन किया है जो एक फैक्ट्री में ठेकेदार के अंतर्गत काम करती है लेकिनजब इसकी बेटी बीमार हो जाती है तो वह अस्पताल में दो–तीन दिन रहती हैऔर एक व्यक्ति से उधार मांगे गए रुपए से अपनी बेटी का इलाज करवाती हैलेकिन जब वह दो–तीन दिन के बाद वापस नौकरी पर जाती है तो ठेकेदारउसकी जगह किसी और को काम पर रख लेता है। ''मजदूर और मालिक मेंलड़ाई हो गई द्यअब पूछने जाती है तो कहते हैं उनको तो हटा दिया गयाहै।''पृष्ठ 40 जो नारी अपनी आजीविका चलाने के लिए फैक्ट्री में काम करतीहै उसे दो–तीन दिन में ही ठेकेदारों द्वारा ऐसे ही निकाल दिया जाता है ।

प्रस्तुत कहानी संग्रह में लेखिका द्वारा रचित ''छावनी में बेघर'' कहानीके माध्यम से लेखिका ने कहानी में चित्रित मिसेज कुमार की विडंबना औरआर्थिक संवेदना के बारे में चित्रण किया है। मिसेज कुमार के पति मेजर कुमारआर्मी में नौकरी करते हैं एक दिन जब उन्हें कारगिल में बुला लिया जाता हैतो वहां पर वह अपनी फैमिली को साथ नहीं रख सकते थे तो वह अपने दोनोंबच्चों और पत्नी को अपने क्वार्टर में ही छोड़ जाते हैं लेकिन कुछ दिनों केबाद आर्मी के हेड क्वार्टर से नोटिस आता है कि आपको यह घर खाली करनापड़ेगा।एडम ब्रांच ने लिखा है कि फील्ड में गए ऑफिसर की फैमिली सर प्लसहो गई है घर उतने नहीं है। तो मैसेज कुमार सोचती है कि अब हम कहांजाएं अगर बाहर कमरा भी लेंगे तो जितनी उनकी तनख्वाह है उससे तो केवलकिराया ही भरा जाएगा। वह सोचती है कि–''बाप रे! इन दो कमरों काकिराया पड़ेगा दस हजार रूपए प्रतिमाह। हम देने की औकात में नहीं है। हमेंविश्वास नहीं हो रहा है कि सचमुच पैसे काट लिए जाएंगे हमारे पति इस देशके लिए लड़ने गए हैं तो उनकी तनख्वाह से भले कैसे काटे जा सकते हैं।

वह भी दस हजार! आधी से ज्यादा तनख्वाह!'' पृष्ठ 120 इस प्रकार न जानेकितनी ऐसी देश में नारी हैं जिनके पति आर्मी में नौकरी करते हैं तो उनकीपत्नियां अपने बच्चों के साथ अकेले जीवन निर्वाह करती हैं उस आर्मी मैन कोइतनी भी तनख्वाह नहीं मिल पाती कि उसके बच्चे और पत्नी आराम से किसीघर में रह सके और उनका लालन–पालन और शिक्षा आराम से दिलाई जासके।

इस प्रकार उपरुक्त विवेचन आधार पर प्रस्तुत कहानी संग्रह में लेखिकाने नारी की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति का यथार्थ वर्णन कियालेखिका ने अपने कहानी संग्रह के माध्यम से नारी की मुक्ति, नारी के अर्थऔर संस्कृति जीवन में वास्तविकता को सह उदाहरण चित्रित किया है जिससेनारी अपने जीवन में मानसिक द्वंद्व, बाहरी असामाजिक तत्वों से और अर्थ केप्रति लोहा लेते नजर आती हैं।

संदर्भ सूची

1.अल्पना मिश्र, छावनी में बेघर, पृ० 9
2.वही, पृ० 96
3.वही, पृ0 96
4.वही, पृ० 40
5.वही, पृ० 120